आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16

सृष्टि संवत् 1960853116
विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर   विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर   सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 12   अंक : 17   रोहतक, 28 सितम्बर, 2015   वार्षिक शुल्क : 150/-   आजीवन 1500/-

मृतक श्राद्ध विषयक भ्रान्तियां : विचार और समाधान

❑ मनमोहन कुमार आर्य

हिन्दू समाज आजकल अन्धविश्वासों का पर्याय बन गया है। श्राद्ध शब्द को पढ़कर धर्म-कर्म में रुचि न रखने वाला एक अल्प ज्ञानी सामान्य व्यक्ति भी समझता है कि श्राद्ध अवश्य ही श्रद्धा से सम्बन्ध रखता है। जिस प्रकार से देव से देवता शब्द बनता है उसी प्रकार से श्रद्धा से श्राद्ध बनता है। श्रद्धा उन पारिवारिक जनों व विद्वानों के प्रति होती है जिनसे हमें कुछ लाभ हुआ होता है। हमारे माता-पिता व वृद्ध पारिवारिक लोग व आचार्यगण हमारी श्रद्धा के मुख्य रूप से पात्र होते हैं। माता-पिता, दादी-दादा, प्रपितामही-प्रपितामह आदि के अतिरिक्त चाचा, ताऊ, बुआ, फूफा, मामा व मौसी आदि सभी संबंधियों के प्रति हमारी श्रद्धा व आदर का भाव होता है। अतः श्रद्धापूर्वक उन जीवित अपने से अधिक आयु वालों को अपने सद्व्यवहार व सेवा से सन्तुष्ट रखना ही श्राद्ध व तर्पण हो सकता है। यदि हम माता-पिता, अन्य वृद्धों व आचार्यों, सभी को भोजन, वस्त्र व उनकी आवश्यकतानुसार धन आदि उन्हें देते हैं और वह हमारी इस सेवा व दान से प्रसन्न होते हैं तो हमारा यह कृत्य श्राद्ध व तर्पण में आता है। श्राद्ध है श्रद्धापूर्वक सेवा और तर्पण अपने आचरण व सेवा से उन्हें सन्तुष्ट करना। माता-पिता को सेवा की आवश्यकता तभी तक होती है जब तक की वह जीवित होते हैं। मरने के बाद अन्त्येष्टि द्वारा उनका शरीर भस्म कर दिया जाता है। उनका मुख, उदर व सभी शरीरांग जलकर नष्ट हो जाते हैं और कुछ मुट्ठी राख ही बचती है। अब चेतन तत्व हमारी व अन्यों की अनादि, अजर, अमर, आत्मा क्योंकि शरीर से पृथक हो जाती है अतः उसे भोजन की आवश्यकता नहीं होती। अब तो परलोक व परजन्म में उनका सहायक ईश्वर तथा उनके कर्म अर्थात् प्रारब्ध ही होते हैं। हम कुछ भी कर लें, हमारे कुछ भी करने से हमारे किसी मृतक सगे सम्बन्धी माता-पिता आदि को कोई, किसी प्रकार का व किंचित् लाभ नहीं हो सकता। ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि इसलिए नहीं दी की वह किसी भी कार्य को इसलिए करे कि उसके पूर्वज व अन्य लोग इस कार्य को करते चले आ रहे हैं अपितु इसलिए दी है कि वह प्रत्येक कार्य को सत्य व असत्य का विचार कर करे। यदि श्राद्ध को देखे तो इससे हमारे ब्राह्मण वर्ग के पुरोहितों को विशेष आर्थिक व भौतिक लाभ होता है। वह अच्छा भोजन करते हैं और उन्हें कुछ वस्तु भी दान स्वरूप भेंट करनी होती हैं। किसी कार्य आदि से जिस व्यक्ति को कोई लाभ होता है तो उसका वह संस्कार बन जाता है। उसे कितना ही कोई मना करे, वह उस कार्य को छोड़ता नहीं है। रिश्वत, कामचोरी, शराब, मांसाहार जैसी बुरी आदतों की ही तरह हर कार्य जिससे किसी को कोई लाभ होता हो, उसे वह छोड़ नहीं पाता। अतः मनुष्य को स्वयं ही सत्य व असत्य का विचार करना चाहिये और असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करना चाहिये। इस कारण कि संसार में आपसे अधिक आपका कोई हितैषी नहीं है। और तो अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं। अपना हित व अहित देखना और बुद्धि पूर्वक निर्णय करना आपका ही काम है, यह बात गांठ बांध लेनी चाहिये। यही मनुष्य जीवन का मुख्य कर्तव्य व उद्देश्य है।

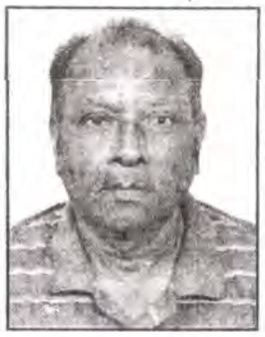

श्राद्ध में जो भोजन ब्राह्मणों को कराया जाता है उससे उनकी क्षुधा की निवृत्ति वा पेट भरता है। हमारे मृतक पूर्वजों का न तो हमें पता है और न ही हमारे श्राद्ध खाने वाले व बड़े से बड़े किसी विद्वान् को कि वह आत्मायें जिनका श्राद्ध हो रहा है, वह कहां हैं ? मृत्यु के बाद मृतक की आत्माओं की ओर से अपने किसी सगे सम्बन्धी को कभी भी अपना न तो कोई समाचार बताया जाता है और न हमारे हाल चाल ही पूछे जाते हैं। मरने के बाद मनुष्य सब कुछ भूल जाता है। परमात्मा की प्रेरणा से वह अपने कर्मों के अनुसार नई योनि में जन्म लेता है। मनुष्य जन्म लेने वाला कोई बच्चा यह नहीं बताता कि मैं पहले मरा हूं, वहां रहता था, अमुक नाम के लोग मेरे पुत्र-पुत्री थे, आदि आदि। कारण कि वह सब कुछ भूल चुका है। मनुष्य जन्म लेने में जीवात्मा को मात्र न्यूनतम गर्भावास में 10 महीनों का समय लगता है। किसी किसी मामले में कुछ अधिक भी हो सकता है। अब विचार कीजिए कि इस नये उत्पन्न शिशु का इसके पूर्व जन्म के पारिवारिक जनों ने श्राद्ध किया होगा तो इसको तो कभी भोजन मिलता उसे स्वयं व उसके परिवार जनों को अनुभव नहीं हुआ। यह तो जन्म लेने के बाद प्रातः सायं प्रतिदिन माता से भोजन पाता व करता है। यदि श्राद्ध के दिन इसके पूर्व जन्म की कोई सन्तान इसका श्राद्ध करे तो एक समय के भोजन की इसकी निवृत्ति होकर अनुभव भी होना चाहिये। ऐसा तो कभी किसी को मिलता ही नहीं है। यदि कोई यह मानता है कि श्राद्ध करने से पूर्वजों को भोजन पहुंचता है तो उन्हें प्रातःसायं दोनों समय पूरे वर्ष भर ही

क्रमशः पृष्ठ 7 पर...

॥ ओ३म्॥

गुरुकुल झज्जर का स्थापना शताब्दी समारोह

सभी आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल झज्जर का शताब्दी समारोह तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से 6, 7, 8 मार्च 2016 (रविवार, सोमवार, मंगलवार) को मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर बड़े-बड़े राजनेता, संन्यासीगण, विद्वान् व प्रसिद्ध भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया जाएगा।

आप सभी आर्यजनों से नम्र निवेदन है कि इस शताब्दी समारोह में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

निवेदक :

विद्यार्यसभा, गुरुकुल झज्जर मो०नं० 9416055044

पांच दिवसीय वेदप्रचार सप्ताह कार्यक्रम सम्पन्न

दिनांक 20.09.2015 रविवार को आर्यसमाज गोहाना मण्डी के पांच दिवसीय वेदप्रचार सप्ताह के समापन पर कार्यक्रम हुआ। इस वेदप्रचार में वैदिक विद्वान् पूज्य चैतन्यमुनि जी व सत्याप्रियायति जी ऊधमपुर (जम्मू-कश्मीर) तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री जसविन्द्र आर्य उपस्थित रहे। प्रातः यज्ञोपरान्त श्री जसविन्द्र आर्य ने भजनों के माध्यम से देशभक्ति व शहीदों पर प्रकाश डाला। इसके बाद मुनि जी ने अपने उपदेश में बतलाया कि व्यक्ति के जीवन में कर्म का महत्त्व है। व्यक्ति को निष्काम कर्म करते रहना चाहिए। गीता में श्रीकृष्ण जी कहते हैं मनुष्य के कर्म से तीन गतियां होती हैं। पहली गति मोक्ष, दूसरी गति में व्यक्ति को अच्छे माता-पिता व परिवार मिलता है तथा तीसरी गति में पशु आदि की योनि मिलती है। परन्तु मनुष्य जीवन का लक्ष्य तो मोक्ष प्राप्ति है। परमपिता परमेश्वर ही सच्चा गुरु है। ईश्वर को सच्चा गुरु मानते हुए जीवन में अष्टांग योग अपना कर मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है। मोक्ष की प्राप्ति एक जन्म में प्राप्त न होकर कई जन्म भी लग जाते हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि ही मोक्ष का रास्ता है। पूर्व जन्म के संस्कार लेकर ही मनुष्य जन्म लेता है व मोक्ष की ओर अग्रसर होता है। मोक्ष का आनन्द मोक्ष प्राप्त करने वाला ही ले सकता है, उसको वर्णित नहीं कर सकता। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने की।

—मंत्री, आर्यसमाज गोहाना मण्डी, जिला सोनीपत

दर्शन योग महाविद्यालय की नई शाखा में प्रवेश प्रारम्भ

आर्यजगत् के महान् योगी स्वामी श्री सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ की शाखा का शुभारम्भ 1 नवम्बर 2015 को रोहतक में स्थित प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर में हो रहा है। इसमें दर्शन के अध्यापन की योजना है। प्रवेश के इच्छुक ब्रह्मचारी शीघ्र रोजड़ में सम्पर्क करें।

प्रवेश के लिए योग्यता—

प्रवेश—केवल ब्रह्मचारियों (पुरुषों) के लिए।

आयु—कम से कम 18 वर्ष।

शैक्षणिक योग्यता—कम से कम 12वीं या समकक्ष।

विशेषताएँ—

प्रत्येक ब्रह्मचारी को पक्षपात रहित भोजन, वस्त्र, दूध-घी, फल, पुस्तक, आसन आदि सभी वस्तुएँ निःशुल्क प्राप्त होंगी। प्रतिदिन व्यक्तिगत उपासना के लिए अवसर उपलब्ध रहेगा। प्रतिदिन यज्ञ, वेदपाठ, वेदस्वाध्याय होगा। प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण होगा। निदिध्यासन के लिए अवसर दिया जायेगा। क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के माध्यम से विवेक-वैराग्य, मनोनियन्त्रण, यम-नियम, ध्यान, समाधि आदि विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रतिदिन आध्यात्मिक उन्नति के लिए कुछ घण्टे मौन पालन का अवसर रहेगा।

विशेष-रोजड़ स्थित मुख्य शाखा में भी प्रवेश प्रारम्भ है।

सम्पर्क हेतु पता— **दर्शन योग महाविद्यालय**

आर्यवन, रोजड़, पत्रा-सागपुर, ता. तलोद, जिला साबरकांठा, गुजरात-383307

(02770) 287418, 287518, Mob. 9409415011, 9409415017

E-mail : darshanyog@gmail.com, Web : darshanyog-org

उद्घाटन समारोह निमन्त्रण

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ की सुन्दरपुर शाखा का उद्घाटन समारोह 1 नवम्बर 2015 को प्रातः 8 से 10 बजे माननीय पूज्य आचार्य बलदेव जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया सुन्दरपुर रोहतक में होगा। इस कार्यक्रम में स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, निदेशक, स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती प्रधानाचार्य, स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक आदि विद्वान् उपस्थित होंगे। इस कार्यक्रम में आप सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक : **वानप्रस्थ निगम मुनि** (पूर्व नाम रणवीरसिंह बल्हारा) प्रबन्धक, दर्शन योग महाविद्यालय महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर, रोहतक

अकेडमी के शुभारम्भ पर यज्ञ

दिनांक 9 अगस्त 2015 को महेन्द्रगढ़ में नीरज अकेडमी के शुभारम्भ के अवसर पर कार्यक्रम हुआ। आर्यजगत् के वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी संचालक पतञ्जलि योगाश्रम भऊ रोहतक तथा आचार्य अभयदेव के उपदेश हुए। सर्वप्रथम यज्ञ का आयोजन हुआ। श्री ऊधम सिंह व श्री विकास आर्य मुख्य यजमान थे। इस अवसर पर अनेक शिक्षाविद् उपस्थित थे। आचार्य जी ने विद्या को सबसे सर्वोत्तम कर्म कहते हुए कहा कि मनुष्य बिना विद्या के सब प्राणियों से हानिप्रद हो सकता है। जहां अन्य प्राणी अपने प्राकृतिक भोजन आदि से स्वस्थ रहते हैं, वहीं अज्ञान से मनुष्य मांसाहारी, द्वैषी, क्रोधी, चोर, व्यभिचार जैसे कर्म से स्वयं तथा संसार को दुःखी कर देता है। दोनों शिक्षित आर्यों के सिर पर मोटी चोटी दूसरे शिक्षित युवाओं संस्कारों की महानता प्रकट कर रही थी। आचार्य जी ने अकेडमी में अध्यात्म विचार भी देने का संकल्प करवाया।

गुरुकुल धीरणवास (हिसार) का स्थापना दिवस व कार्यकारिणी का चुनाव सम्पन्न

दिनांक 05.09.2015 को गुरुकुल धीरणवास जिला हिसार में जन्माष्टमी पर्व व स्थापना दिवस मनाया गया। सन्ध्या-हवन के बाद गुरुकुल के नवनिर्मित गेट का स्वामी सर्वदानन्द जी द्वारा उद्घाटन किया। उसके बाद प्रधान श्री इन्द्रजीत आर्य की अध्यक्षता में सभा हुई। कई छात्रों ने ईश्वरभक्ति के भजन गाए। कई वक्ताओं ने गुरुकुल शिक्षा पर व श्रीकृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डाला। स्वामी जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् कार्यकारिणी का चुनाव हुआ। सर्वसम्मति से चौथी बार श्री इन्द्रजित् आर्य बालसमन्द को प्रधान चुना गया एवं कार्यकारिणी बनाने का अधिकार दिया गया। इस अवसर पर मा० चतरसिंह आर्य, सू० हरिसिंह आर्य, रामस्वरूप आर्य, युद्धवीर आर्य, शोभाचन्द आर्य, जगदीशचन्द्र आर्य, तेलूराम आर्य, नत्थूसिंह आर्य, आचार्य राजमल, डॉ. पृथ्वीसिंह आर्य, बजरंगलाल आर्य आदि उपस्थित थे।

—वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, नलवा

वेदप्रचार मण्डल (हिसार) की महत्त्वपूर्ण बैठक सम्पन्न

वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार की बैठक दिनांक 11.09.2015 को दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के हॉल में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महामन्त्री मास्टर रामपाल आर्य की अध्यक्षता में हुई। उनके साथ सभा के गणक नवीन आर्य, डॉ. सुरेन्द्र दहिया, कर्णसिंह मोर, सुभाष सांगवान पधारे। बैठक में स्थानीय अधिकारी संरक्षक वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही, प्रधान रामकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष सेठ सत्यप्रकाश मित्तल, बौद्धिक अध्यक्ष आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी, सु० हरिसिंह आर्य, शमशेर आर्य नम्बरदार, महाशय फूलसिंह आर्य आदि ने भाग लिया। बैठक में वेदप्रचार को गति देने पर विचार किया गया। मन्त्री रामपाल आर्य ने 23 लाख की रथ को प्रचार हेतु हिसार जिला को देने का प्रस्ताव रखा। श्री रामकुमार आर्य ने विचार विमर्श के बाद 7 अक्तूबर से 30 अक्तूबर तक रथ भेजने को कहा। मन्त्री जी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने वेदप्रचार मण्डल की गतिविधियों का ब्यौरा रखा। कार्यक्रम की सबने सहराना की।

-कैलाशचन्द्र शास्त्री, महाविद्यालय

॥ ओ३म् ॥

प्रतिकूल की अनुकूलता

-: वेद-मन्त्र :-

ऐन्द्रः प्राणोऽअङ्गेऽअङ्गे निदीध्यदैन्द्रऽउदानोऽअङ्गेऽअङ्गे निधीतः। देव त्वष्टर्भूरि ते सꣳसमेतु सलक्ष्मा यद्विषुरूपं भवाति। देवत्रा यन्तमवसे सखायोऽनु त्वा माता पितरो मदन्तु॥ 20॥

(यजुर्वेदभाष्यम्)

पूज्य आचार्य बलदेव जी

1. **ऐन्द्रः प्राणः**=जीव की प्राणशक्ति **अङ्गे-अङ्गे**=अङ्ग-प्रत्यङ्ग में **निदीध्यत्**= चमकती है। **ऐन्द्रः उदानः**=यह जीव सम्बन्धी उदानशक्ति भी **अङ्गे-अङ्गे**=प्रत्येक अङ्ग में **निधीतः**=(निहितः) निहित हुई है। प्राणशक्ति स्वास्थ्य का कारण बनती है तो उदानशक्ति ज्ञानवृद्धि के द्वारा सब प्रकार के उत्थान का कारण होती है।

2. हे **देव**= दिव्य गुणसम्पन्न! **त्वष्टः**=शक्ति व ज्ञान के द्वारा सब उत्तमताओं का निर्माण करनेवाले! **ते**=तुझे **भूरि**=(भृ=धारणपोषण) धारणपोषण के सब तत्त्व **सम् सम् एतु**=उत्तमता से प्राप्त हों। **यत्**=जो **विषुरूपम्**=प्रतिकूलता हो वह **सलक्ष्मा**=अनुकूलता में परिणत **भवाति**=हो जाती है। प्राणोदान शक्ति के ठीक होने पर किसी तत्त्व की प्रतिकूलता का प्रश्न ही नहीं रह जाता। ये प्राणोदान सबको अनुकूल कर लेते हैं।

3. सबको अनुकूल बनाकर **अवसे**=अपने रक्षण के लिए **देवत्रा यन्तम्**=दिव्य गुणों की ओर जाते हुए **त्वा अनु**=तुझे देखकर **सखायः**=सब सखा व **माता पितरः**=माता-पिता **मदन्तु**=हर्ष का अनुभव करें। तुम्हें उन्नतिपथ पर जाते देखकर सबको प्रसन्नता हो।

भावार्थ—प्राण एवं उदान को सिद्ध करके हम जीवन का निर्माण करें। दिव्य गुणों की ओर बढ़ें। हमारे जीवन को देखकर मित्रों व माता-पिता को प्रसन्नता हो। **—आचार्य बलदेव**

फिर कब आयेंगे

ऋषिवर मुक्त हुए, न जाने फिर कब आयेंगे।
ये आंखें तरस रही हैं, न जाने फिर कब आयेंगे॥
देश की हर गली वीरां हो गई, बहार में चक्षु खिंजा हो गई।
हर चेहरा उदास है, न जाने फिर कब आयेंगे॥ ऋषिवर मुक्त..... ॥
वेदहीन गुरुडम भस्मा रहा, असत्य का खुमार सब पे छा रहा।
सत्य हताश, निराश है, न जाने फिर कब आयेंगे॥ ऋषिवर मुक्त..... ॥
योगपथ से सब दूर हो गये हैं, ढोंग सभी मशहूर हो गये हैं।
मन में घोर संताप है, न जाने फिर कब आयेंगे॥ ऋषिवर मुक्त..... ॥
भोग में तृप्ति भरम हो गया है, ऐषणा भरा हर करम हो गया है।
जल में मछली को प्यास है, न जाने फिर कब आयेंगे॥ ऋषिवर मुक्त..... ॥
बेहाली में हमें देख न पाओगे, दया करके तुम लौट आओगे।
'चैतन्य' को विश्वास है, न जाने फिर कब आयेंगे॥ ऋषिवर मुक्त..... ॥

—महात्मा चैतन्यमुनि, महादेव, सुन्दरनगर-174401 (हि०प्र०)

विज्ञापन के माध्यम से दी जाने वाली सहयोग राशि

अन्दर के पृष्ठों के विज्ञापन रेट

एक पृष्ठ 5000/-, आधा पृष्ठ 2500/-, चौथाई पृष्ठ 1000/-, 1/8 पृष्ठ 500/- एवं 1/8 पृष्ठ से कम स्थान पर न्यूनतम एक बार का शुल्क 250/- रु०।

नोट—11 माह की सहयोग राशि प्राप्त होने पर धन्यवाद स्वरूप 12 माह के 48 अंकों में विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा। '**आर्य प्रतिनिधि**' साप्ताहिक प्रत्येक मास की 7,14,21, 28 तारीखों में प्रकाशित किया जाता है।

व्यवस्थापक, 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक,
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

चतुर्थ समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न 291. क्या पिता, पितामह के दुष्ट कार्यों को भी ग्रहण करना चाहिए?

उत्तर-जिस मार्ग से हमारे पिता, पितामह चले हों, उस मार्ग से सन्तान भी चले, परन्तु जो सत्पुरुष पिता, पितामह हों, उन्हीं के मार्ग से चलें और जो पिता, पितामह दुष्ट हों तो उनके मार्ग पर कभी न चलें। क्योंकि उत्तम धर्मात्मा पुरुषों के मार्ग पर चलने से दुःखी कभी नहीं होता। जो ऐसा न माने तो क्या जिसका पिता दरिद्र हो, अन्धा हो तो उसकी सन्तान धन को फेंक देवे या अपनी आंखें फोड़ लेवे? नहीं, ऐसा नहीं, अतः उत्तम कर्मों का सेवन और कुकर्मों का त्याग करना चाहिए।

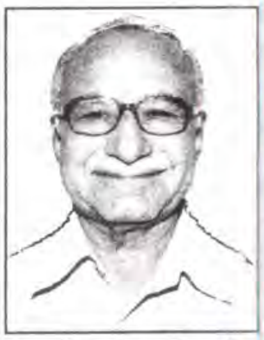
कन्हैयालाल जी आर्य

प्रश्न 292. क्या रज-वीर्य के योग से वर्ण मानने चाहिएं अथवा गुण-कर्म से?

उत्तर-जो कोई रज, वीर्य के योग से वर्ण मानें और गुण, कर्म के योग से न मानें, तो उन से पूछना चाहिए कि कोई अपने वर्ण को छोड़ नीच अन्त्यज, ईसाई, मुसलमान हो गया हो तो उसको ब्राह्मण क्यों नहीं मानते? तब आप कहोगे कि उसने ब्राह्मण कर्म छोड़ दिया है तो वह ब्राह्मण नहीं है। अतः सिद्ध हुआ कि उत्तम कर्म करने से व्यक्ति ब्राह्मण और नीच कर्म करने से शूद्र कहलाता है। अतः वर्णव्यवस्था जन्मना नहीं बल्कि कर्मणा होती है।

प्रश्न 293. यजुर्वेद में ब्राह्मणों को ईश्वर का मुख, क्षत्रियों को भुजाएं, वैश्यों को ऊरू (जांघ) और शूद्रों को पगो (पैरों) की संज्ञा दी है, क्या यह अर्थ ठीक नहीं है?

उत्तर-इस मन्त्र का अर्थ ठीक नहीं है। इसका अर्थ इस प्रकार है कि जो पूर्ण व्यापक परमात्मा की सृष्टि में मुख के सदृश सब में मुख्य उत्तम है, वह ब्राह्मण। जिसमें बल-वीर्य अधिक हो वह क्षत्रिय, जो सब पदार्थों और सब देशों में ऊरू के बल से जावे आवे, प्रवेश करे, वह वैश्य और जो पग के अर्थात् नीच अंग के सदृश मूर्खत्वादि गुण वाला हो वह 'शूद्र' है। परमपिता परमात्मा तो निराकार है, अतः उसके अंग कैसे हो सकते हैं? अतः यह तुलना ठीक नहीं है। इसलिए कर्मों से ही वर्ण-व्यवस्था उचित है।

प्रश्न 294. यदि कोई शूद्र कुल में जन्मा हो तो वह भी उच्च वर्ण में प्रविष्ट हो सकता है?

उत्तर-जो शूद्र कुल में उत्पन्न होकर ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के समाज गुण, कर्म, स्वभाव वाला हो जाए तो वह शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य बन सकता है, वैसे ही जो ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ हो तो यदि उसके गुण, कर्म, स्वभाव शूद्र वाले हो जायें तो वह भी शूद्र हो जाये अर्थात् चारों वर्णों में जिस-जिस वर्ण के सदृश जो-जो पुरुष वा स्त्री हो, वह-वह उसी वर्ण में गिनी जाये।

प्रश्न 295. वर्ण-परिवर्तन कैसे हो सकता है?

उत्तर-धर्माचरण से निकृष्ट वर्ण अपने से उत्तम-उत्तम वर्ण को प्राप्त होता है और वह उसी वर्ण में गिना जाये जिस-जिस के योग्य होवे। वैसे ही अधर्माचरण से पूर्व अर्थात् उत्तम वर्ण वाला मनुष्य अपने से नीचे-नीचे वाले वर्ण को प्राप्त होता है और उसी वर्ण में गिना जाये।

प्रश्न 296. जो किसी के एक पुत्र ही पुत्र व पुत्री होवे, वह दूसरे वर्ण में प्रविष्ट हो जाये तो उसके माँ-बाप की सेवा कौन करेगा और इस प्रकार वंशोच्छेदन हो जायेगा, इसकी क्या व्यवस्था होनी चाहिए?

उत्तर-न किसी की सेवा का भंग और न वंशोच्छेदन होगा, क्योंकि उन के अपने पुत्र-पुत्रियों के बदले स्ववर्ण के योग्य दूसरे सन्तान विद्यासभा और राजसभा की व्यवस्था से मिलेंगे। इसलिए कुछ भी अव्यवस्था नहीं होगी। **क्रमशः अगले अंक में......**

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

स्वास्थ्य-चर्चा....

पौष्टिकता से भरपूर है गुड़

गुड़ का हमारे देश में घर-घर में हर मांगलिक कार्यों में उपयोग होता है। बिना गुड़ के मांगलिक कार्य अधूरा माना जाता है। शुभ कार्य के प्रारम्भ में गुड़ को सगुन माना जाता है। किसी भी शुभ कार्य के लिए प्रस्थान के समय गुड़ की डली खाने का हमारे यहां रिवाज है।

मीठी चीजों में गुड़ सर्वप्रिय और सुलभ भोज्य है। जाड़े के दिनों में गुड़ का सेवन बहुत लाभदायक माना जाता है। जोड़ों में गुड़ खाने से शरीर में गर्मी पैदा होती है और ठण्ड दूर भागती है। इसमें ऊर्जा, कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन ज्यादा होता है और यह शरीर का तापमान नियन्त्रित करने के लिए उपयुक्त है। गुड़ में आयरन की पर्याप्त मात्रा होने के कारण यह एनीमिया के रोगियों के लिए बहुत ही लाभदायक है। गुड़ का 21 प्रतिशत ग्लूकोज खाते ही शीघ्र ही मांसपेशियों को ताकत प्रदान करता है। अधिक थकान या कमजोरी महसूस होने पर गुड़ का सेवन तुरन्त ऊर्जा देता है। गुड़ रक्त से टाक्सिन दूर करता है, जिससे त्वचा दमकती है और मुंहासों की समस्या नहीं होती है। गुड़ को हृदय की शक्ति बढ़ाने के लिए बहुत कारगर पाया गया है। गुड़ खाने वालों का रक्त-संचार अबाध रूप से होता है। यदि प्रतिदिन एक गिलास पानी या दूध के साथ गुड़ का सेवन किया जाये तो पेट को ठंडक मिलती है।

आयुर्वेद के ग्रन्थ हरित संहिता में गुड़ को क्षय, खांसी, क्षतक्षीणता, पांडुरोग और रक्त की कमी में सर्वश्रेष्ठ पथ्य बताया गया है। आयुर्वेद के ग्रन्थ निघण्टुकार ने गुड में और भी कई विशेष गुण माने हैं। उसके कथनानुसार, गुड़, त्रिदोषनाशक, हृदय, मलमूत्र के रोगों को नष्ट करने वाला, खुजली और प्रमेह नाशक, थकावट को दूर करने वाला और पाचन शक्ति को बढ़ाने वाला है। गुड़ जितना पुराना हो उतना ही गुणों से युक्त होता है। महर्षि चरक के अनुसार गुड़ के सेवन से मज्जा, रक्त, मांस और चर्बी बढ़ती है जिससे शरीर में पुष्टता व सुडौलता आती है। इसका नियमित सेवन शारीरिक दुर्बलता को दूर करता है।

इंग्लैण्ड के एक हृदय विशेषज्ञ का मत है कि गुड़ की पपड़ी या गुड़ की चीज खाने से हृदय मजबूत होता है। अतः दिल के मरीजों को शक्कर का सेवन न करके गुड़ का सेवन करना चाहिए। भारतीय गन्ना शोध संस्थान के प्रोसेस इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. जसवन्त सिंह ने गुड़ की पोषण-गुणवत्ता को जोरदार तरीके से रेखांकित किया है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण इलाकों में डायबिटीज इसलिए कम होती हैं कि वहां गुड़ अधिक खाया जाता है।

गुड़ बहुत जल्दी पच जाता है। इसलिए इससे ब्लड शुगर का स्तर भी तुरन्त नहीं बढ़ता है। गुड़ नियमित खाते रहने से ब्लड प्रेशर संतुलित रहता है और शरीर से जहरीले पदार्थ बाहर निकलते रहते हैं।

गुड़ के औषधीय उपयोग

- गुड़ के साथ अजवायन का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से बच्चों के पेट के कीड़े दूर हो जाते हैं।
- रात को नींद की अवस्था में पेशाब करने वाले छोटे बच्चों को गुड़ में तिल मिलाकर खिलाना चाहिए।
- आधा सीसी के दर्द में 10 ग्राम गुड़, पांच ग्राम देसी घी में मिलाकर प्रातःकाल सूर्योदय के समय सेवन करने से आराम मिलता है।
- भोजन के साथ गुड़ खाने से थकान दूर हो जाती है तथा भोजन के पश्चात् थोड़ा-सा गुड़ खाने से भोजन शीघ्र पच जाता है और गैस नहीं बनती है।
- टैक्सटाइल मिलों में जहां धागा बनता है, खाते में काम करने वाले श्रमिक वर्ग और सुपरवाइजरों को गुड़ का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए ताकि कारखाने में उड़ने वाली डस्ट से होने वाले नुकसान से बचा जा सके।
- गुड़ के साथ अदरक का प्रयोग करने से सर्दी, खांसी में आराम मिलता है।
- गुड़ में मूत्राशय सम्बन्धी विकारों को दूर करने की अद्भुत शक्ति होती है। गुड़ को पानी या दूध के साथ लें, मूत्र खुलकर आयेगा।
- गुड़ के साथ पकाये चावल खाने से बैठा हुआ गला व आवाज खुलती है।
- गुड़ और काले तिल के लड्डू खाने से सर्दी में अस्थमा की शिकायत नहीं होती है।
- गुड़ को आंवले के चूर्ण में मिलाकर सेवन करने से वीर्य वृद्धि सहित श्रमनास, रक्तपित्त, दाहशूल और मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।
- गुड़ 10 ग्राम और काले तिल 5 ग्राम, इन्हें दूध के साथ पीसकर उसमें 10 ग्राम घी मिलाकर मस्तक और कनपटियों पर लेप करने से लाभ होता है।

—अभय कुमार जैन

(यज्ञ-योग-ज्योति से साभार)

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. आर्यसमाज मन्दिर कालका (पंचकूला)	2 से 4 अक्तू० 2015
2. आर्यसमाज मन्दिर डोरी बालान, करौल बाग (दिल्ली)	2 से 4 अक्तू० 2015
3. आर्यसमाज धनौंदा ब्लाक-कनीना (महेन्द्रगढ़)	27 से 29 अक्तू० 2015
4. आर्यसमाज तिलक नगर, रोहतक	24 से 25 अक्तू० 2015
5. आर्यसमाज होडल जिला पलवल	30 अक्तू० से 1 नव० 2015
6. 18वां सत्यार्थप्रकाश महोत्सव सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर (राज०)	31 अक्तू० से 2 नव० 2015
7. आर्यसमाज थर्मल कालोनी (पानीपत)	6 से 8 नव० 2015

—सभामन्त्री

अध्यात्मवाद (Spirituality)

आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, इन दोनों का आपस में सम्बन्ध क्या है - इस विषय का नाम अध्यात्मवाद है। आत्मा और परमात्मा दोनों ही भौतिक पदार्थ नहीं हैं। इन्हें आँख से देखा नहीं जा सकता, कान से सुना नहीं जा सकता, नाक से सूंघा नहीं जा सकता, जिह्वा से चखा नहीं जा सकता, त्वचा से छूआ नहीं जा सकता।

परमात्मा एक है, अनेक नहीं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि उसी एक ईश्वर के नाम हैं। (एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति। ऋग्वेद - 1-164-46) अर्थात एक ही परमात्मा शक्ति को विद्वान लोग अनेक नामों से पुकारते हैं। संसार में जीवधारी प्राणी अनन्त हैं, इसलिए आत्माएं भी अनन्त हैं। न्यायदर्शन के अनुसार ज्ञान, प्रयत्न, इच्छा, द्वेष, सुख, दुख - ये छः गुण जिसमें हैं उसमें आत्मा है। ज्ञान और प्रयत्न आत्मा के स्वाभाविक गुण हैं, बाकी चार गुण इसमें शरीर के मेल से आते हैं। आत्मा की उपस्थिति के कारण ही यह शरीर प्रकाशित है, नही तो मुर्दा अप्रकाशित और अपवित्र है। यह संसार भी परमात्मा की विद्यमानता के कारण ही प्रकाशित है।

आत्मा और परमात्मा - दोनों ही अजन्मा व अनन्त हैं। ये न कभी पैदा होते हैं और न ही कभी मरते हैं, ये सदा रहते हैं। इनका बनाने वाला कोई नहीं है। आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है। हर आत्मा एक अलग और स्वतन्त्र सत्ता है।

आत्मा अणु है, बेहद छोटी है। परमात्मा आकाश की तरह सर्वव्यापक है। आत्मा का ज्ञान सीमित है, थोड़ा है। परमात्मा सर्वज्ञ है, वह सब कुछ जानता है। जो कुछ हो चुका है और हो रहा है सब कुछ उसके संज्ञान में है। अन्तर्यामी होने से वह सभी के मनों में क्या है यह भी जानता है। आत्मा की शक्ति सीमित है, थोड़ी है, परन्तु परमात्मा सर्वशक्तिमान है। सृष्टि को बनाना, चलाना, प्रलय करना - आदि अपने सभी काम करने में वह समर्थ है। पीर, पैगेम्बर, अवतार आदि नाम से कोई एजैंट या बिचौलिए उसने नहीं रखे हैं। ईश्वर सभी काम अपने अन्दर से करता है क्योंकि उसके बाहर कुछ भी नहीं है। ईश्वर जो भी करता है वह हाथ-पैर आदि से नहीं करता क्योंकि उसके ये अंग है ही नहीं।

ईश्वर आनन्दस्वरूप है। वह सदा एक रस आनन्द में रहता है। वह किसी से राग-द्वेष नहीं करता। वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से परे है। ईश्वर की उपासना करने से अर्थात उसके समीप जाने से आनन्द प्राप्त होता है जैसे सर्दी में आग के पास जाने से सुख मिलता है। ईश्वर निराकार है। उसे शुद्ध मन से जाना जा सकता है जैसे हम सुख-दुख मन में अनुभव करते हैं।

यह आत्मा जब मनुष्य शरीर में होती है तब वह कार्य करने में स्वतन्त्र रहती है। उस समय किए कार्यों के अनुसार ही उसे परमात्मा सुख, दुख तथा अगला जन्म देता है। दूसरी योनियां या तो किसी दूसरे के आदेश पर चलती है या स्वभाव से काम करती हैं। उनमें विचार शक्ति नहीं होती। इस

क्रमशः पृष्ठ 6 पर...

वेदों की ओर लौटो

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के **'वेदों की ओर लोटौ'** अभियान को जन-जन की आवाज बनाकर गांव-गांव निकले आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य **आचार्य योगेन्द्र जी** ने हरयाणा के गांव-दोगड़ा अहीर, कोथल कलाँ स्कूल, रसूलपुर, पृथ्वीपुरा, बिहोली उच्च विद्यालय, खानपुरा (महेन्द्रगढ़) में प्रचार कार्यक्रम किया जिसका अत्यन्त सकारात्मक प्रभाव पड़ा। आचार्य जी ने आर्य सिद्धान्तों को प्रभावी ढंग से जनता के सामने रखा जिसे जनता ने हाथों हाथ लिया। उन्होंने माना कि हम आर्य हैं, आर्यावर्त के वासी हैं तथा आर्यों की सन्तानें हैं। अतः किसी भी पाखण्ड से बचे रहेंगे तथा समाज में फैली सामाजिक बुराइयों जैसे-किसी भी प्रकार के नशे आदि से दूर रहेंगे तथा अन्यों को भी बचायेंगे। आचार्य जी ने स्कूलों में अनेक कार्यक्रम किये जिनमें योग, बुद्धि बढ़ाने के साधन ब्रह्मचर्य एवं पाखण्ड से बचने व आर्य सिद्धान्तों पर चलकर जीवन को सफल बनाने के उपायों पर प्रकाश डाला। विद्यालयों ने आचार्य जी के प्रवचनों का लाभ उठाया।

आओ हम सब मिलकर अन्धविश्वास से समाज को ज्ञान के प्रकाश की ओर लेकर चलें। जन-जन से हमारी अपील है कि 'वेदों की ओर लौटो' इस अभियान से आप जुड़िये। जुड़ने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्पर्क करें।

वेदों की ओर लौटो' में प्रस्तुत कार्यक्रम की झलकियां

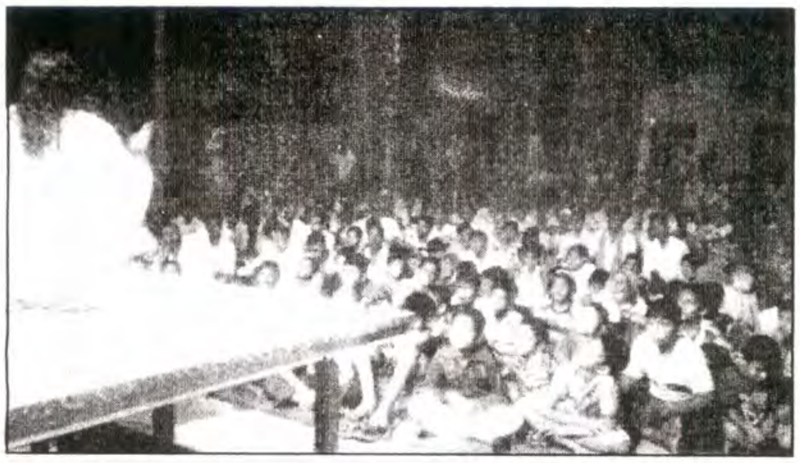

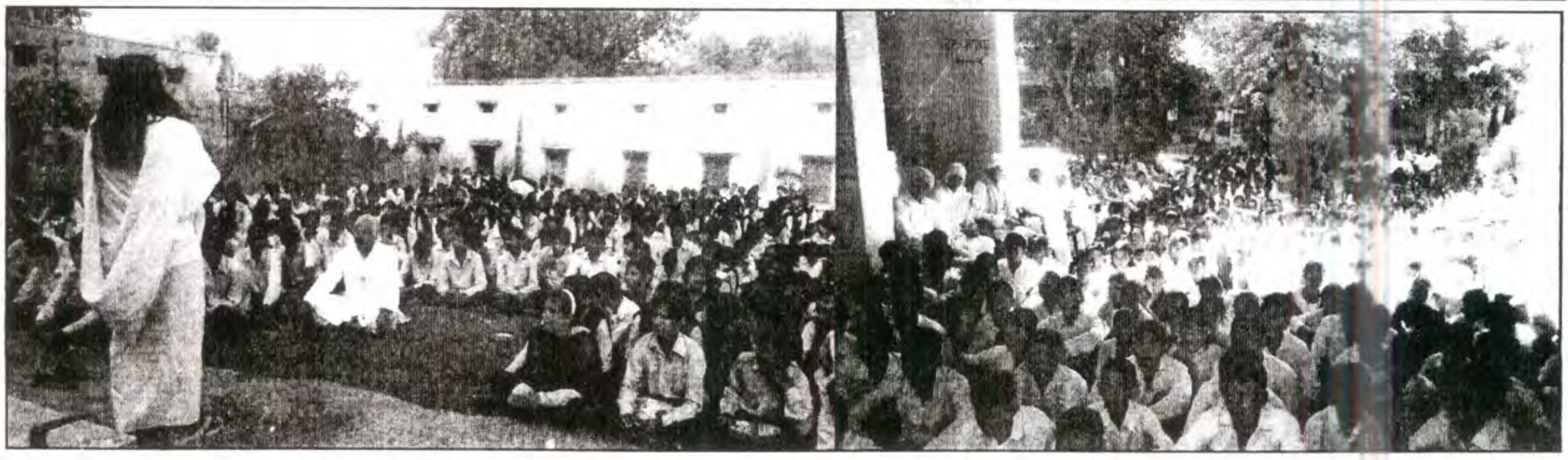

आजादी के 68 वर्ष पूर्ण होने पर भी विकास गति बहुत धीमी एवं समाधान

❑ कृष्ण वोहरा, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल

भारत में 12 पंचवर्षीय योजनाएँ पूर्ण हो चुकी हैं, लेकिन फिर भी विकास की गति बहुत धीमी है। प्रायः यह सुनने में आता है कि आज प्रत्येक व्यक्ति के पास मोबाइल है—प्रत्येक घर में टेलिविजन है। इसलिए देश की अर्थव्यवस्था विकास की पटड़ी पर दोड़ने लगी है। ऐसा नहीं है। यह भ्रम पैदा करने वाला विचार। मोबाइल एवं टेलिविजन आज जीवनयापन में अनिवार्य हो गए हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि देश उन्नत हो गया है।

सामाजिक-आर्थिक जातीय जनगणना 2011 में भारत की गरीबी के बारे में बहुत ही चिन्ताजनक तथ्यों के बारे में प्रकाश डाला गया है।

31.2 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या इतनी गरीब है कि उसके पास अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने लायक भी आय नहीं है। 75 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों की मासिक आय 5000 रुपये से कम है।

ग्रामीण जनसंख्या में 38 प्रतिशत भूमिहीन हैं। भारत गांवों का देश है। कृषि पर ही हमारी अर्थव्यवस्था निर्भर है। यदि गांव का रहने वाला निर्धन है तो देश भी निर्धन होगा। इसीलिए प्रत्येक गांव से नवयुवक काम के लिए नगर में आते हैं। यहाँ आकर वह मजदूरी करते हैं। छोटी-बड़ी दुकानों पर बहुत कम आमदनी पर काम करते हैं।

मजदूरी करने वालों की स्थिति बहुत नाजुक है। कभी काम मिलता है कभी नहीं। उनके छोटे-छोटे टिफनों में चार रोटियां और थोड़ी-सी सब्जी होती है। क्या यह उन्नत देश की तसवीर है? हर नगर में चौराहों पर इन मजदूरों को प्रातःकाल की वेला में देखा जा सकता है।

नेशनल सैम्पल सर्वे की ताजा रिपोर्ट के अनुसार देश में गरीब और अमीर के बीच की खाई निरन्तर चौड़ी होती जा रही है। शहरों के सबसे सम्पन्न 10 प्रतिशत लोगों की औसत सम्पत्ति 14.6 करोड़ रुपये है। गांवों की एक तिहाई और शहरों की एक चौथाई आबादी कर्ज के भार से दबी हुई है। 90 प्रतिशत किसानों के पास 2 हेक्टेयर से कम और एक तिहाई के पास 0.4 हेक्टेयर जमीन है। क्या यह उन्नत देश का संकेत है? नहीं-गरीब देश का।

देश में बेरोजगारी निरन्तर बढ़ रही है। एन.एस.एस.ओ. के सर्वे के अनुसार 2009-2010 में बेरोजगारी दर 6.6 प्रतिशत थी। इसमें पुरुष बेरोजगारी दर 6.1 प्रतिशत और महिला बेरोजगारी दर 8.2 प्रतिशत है। पढ़े लिखे व्यक्ति को यदि रोजगार नहीं मिलेगा तो वह ठगी, चोरी, डाका, फिरौती व अपहरण आदि कार्य करेगा। देश में अपराध बढ़ने का मुख्य कारण बेरोजगारी है।

प्राइवेट सेक्टर के बी.एड. कॉलेज, पॉलिटेकनिक कॉलेजों की संख्या निरन्तर कम हो रही है, क्योंकि इन्हें उत्तीर्ण करने वालों के लिए रोजगार नहीं हैं।

देश को विकासशील करने के लिए यह आवश्यक है कि पर्याप्त मात्रा में विदेशी पूंजी का निवेश हो ताकि लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना हो। लोगों को रोजगार मिले। उनकी क्रयशक्ति बढ़े। इससे बाजारों में रखा हुआ सामान बिकेगा। कारखानों की उत्पादन क्षमता बढ़ेगी। विकास का पहिया चलने लगेगा। इससे बाजारों में आया हुआ सन्नाटा दूर होगा।

केन्द्रीय सरकार ऐसी आर्थिक नीतियाँ बनाए जिससे ग्रामीण लोगों की क्रयशक्ति बढ़े। मनरेगा जैसी नीतियों के निर्माण से ही बेरोजगार लोगों को रोजगार मिलेगा-जैसे सड़कों के किनारे पौधारोपण करना-पानी के लिए गांवों में जलघरों का निर्माण आदि।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कौशिक बसु के अनुसार जिस प्रकार पूर्ण सरकारी नियन्त्रण वाला साम्यवादी मॉडल फेल हो गया है उसी प्रकार अब बाजार आधारित खुली अर्थव्यवस्था का मॉडल भी फेल हो गया है। अमेरिका और पश्चिमी यूरोपीय देशों में लागू इस मॉडल से गरीबों और अमीरों के बीच की खाई और चौड़ी हुई है।

अब पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण भारतीयों के समग्र विकास को ध्यान में रखकर करना होगा। हर पेट को रोटी, हर हाथ को काम और हर खेत को पानी मिले—पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की यही सोच थी। इसी सोच के अनुसार योजना, व्यवस्था, अर्थरचना व अर्थनीति बनानी होगी। स्वदेशी, स्वावलंबन एवं स्वतन्त्रता के आधार पर एक समृद्ध, समर्थ, स्वाभिमानीए एवं संस्कारक्षम सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक रचना करनी होगी। देश की समस्त आर्थिक नीतियों व योजनाओं का निर्माण करते समय एक लक्ष्य हो-गरीबी समाप्त करना, बेरोजगारी कम करना। इसी से ही भारत का विकास होगा। यह समय की चुनौती है।

संपर्क-मुहल्ला जेल ग्राउण्ड
म०नं० 641, सिरसा (हरियाणा)

मौरीशस यात्रा एवं मधुमेह रोग निवारण शिविर का भव्य आयोजन

आर्यजगत् के प्रख्यात वैदिक विद्वान् एवं अध्यात्मपथ के प्रधान संपादक आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी के पावन सान्निध्य एवं आर्य ट्रेवल के सौजन्य से दिनांक 1.10.2015 से 7.10.2015 तक मौरीशस यात्रा एवं मधुमेह रोग निवारण शिविर का भव्य आयोजन मौरीशस में होने जा रहा है।

मौरीशस के विश्वप्रसिद्ध समुद्र किनारे सफेद रेत व यहाँ के मनोहारी दृश्य की यात्रा का सुनहरा अवसर है। यात्री किराया प्रति व्यक्ति 66,000/- है। इस यात्रा में तीन स्टार होटल में रहने की व्यवस्था, आने-जाने का टिकट, वीजा, एयरपोर्ट टैक्स, भ्रमण, प्रातः नाश्ते की व रात्रि भोजन व्यय सम्मिलित है।

इस यात्रा में जाने के इच्छुक व्यक्ति शीघ्र ही अपना नाम तथा अग्रिम राशि के रूप में 45,000/- रुपये अवश्य जमा करायें। यात्रियों के पासपोर्ट की अवधि 2016 तक वैध होनी चाहिए। यात्री अपना चैक या ड्राफ्ट ARYA TRAVEL अथवा VIJAY SACHDEV के नाम से भेज सकते हैं।

सम्पूर्ण जानकारी के लिए हमारे आचार्य जी का संपर्क सूत्र-
आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड,
विकासपुरी, नई दिल्ली-18, मो० 9810084806
कार्यक्रम के संयोजक-**श्री विजय सचदेव** 2613/9, चूनामण्डी,
पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, मो० 9811171166

सैर कर दुनिया की नादान जिन्दगानी फिर कहाँ,
जिन्दगानी भी रही तो नौजवानी फिर कहाँ?

सूर्यकान्त मिश्रा, सह-संपादक

अध्यात्मवाद (Spirituality).... पृष्ठ 4 का शेष....

लिए उन योनियों में की क्रियाओं का उन्हें अच्छा या बुरा फल नहीं मिलता। वे केवल भोग योनियां हैं जो पहले किए कर्मों का फल भोग रही हैं। मनुष्य योनि में कर्म और भोग दोनों का मिश्रण है। मनुष्य स्वतन्त्र रूप से कर्म भी करता है और कर्म फल भी भोगता है। मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ। शरीर मेरा संसार में व्यवहार करने का साधन है। कर्ता और भोक्ता आत्मा है। सुख-दुख आत्मा को होता है। जीवात्मा न स्त्रीलिंग है, न पुलिंग है और न ही नपुंसक है। यह जैसे जैसा शरीर पता है, वैसा वैसा कहा जाता है। (श्वेताश्वतर उपनिषद)

ईश्वर की पूजा ऐसे नहीं की जाती जैसे मनुष्यों की पूजा अर्थात सेवा सत्कार किया जाता है। ईश्वर की आज्ञा का पालन अर्थात सत्य और न्याय का आचरण ही ईश्वर की पूजा है।

कठ उपनिषद में मनुष्य शरीर की तुलना घोड़ा गाड़ी से की गई है। इसमें आत्मा गाड़ी का मालिक अर्थात सवार है। बुद्धि-सारथी अर्थात कोचवान है, मन लगाम है, इन्द्रियां घोड़े हैं। इन्द्रियों के विषय वे मार्ग हैं जिन पर इन्द्रियां रूपी घोड़े दौड़ते हैं। आत्मा रूपी सवार अपने लक्ष्य तक तभी पहुँचेगा जब बुद्धि रूपी सारथी मन रूपी लगाम को अपने वश में रख के इन्द्रियां रूपी घोड़ों को सन्मार्ग पर चलाएगा। उपनिषद में घोड़ा गाड़ी को रथ कहा जाता है और रथ पर सवार को रथी। मनुष्य शरीर में आत्मा रथी है। जब आत्मा निकल जाती है तब शरीर अरथी रह जाता है।

परमात्मा हम सबका माता, पिता और मित्र है। वह सब प्राणियों का भला चाहता है। जब मनुष्य कोई अच्छा काम करने लगता है तो उसे आनन्द, उत्साह, निर्भयता महसूस होती है। वह परमात्मा की तरफ से होता है। और जब वह कोई बुरा काम करने लगता है तब उसे भय, शंका, लज्जा महसूस होती है।

-कृष्णचन्द्र गर्ग, 831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा दूरभाष : 095014-67456

यज्ञ-भजन-प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न

झज्जर 13.9.2015। यज्ञ समिति झज्जर के तत्त्वावधान में मौ० भट्टी गेट में यज्ञ-भजन-प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें यज्ञ ब्रह्मा आचार्य बालेश्वर, यजमान राव रतीराम एवं श्रीमती मामकौर देवी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वैदिक सत्संग मंडल समिति के प्रधान श्री रमेशचन्द्र कौशिक ने की और मंच संचालन कार्यक्रम के संयोजक श्री सुभाष आर्य ने की।

यज्ञ ब्रह्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि जिस प्रकार नदियों का पानी किनारे पर पड़ी गन्दगी को बहाकर ले जाता है उसी प्रकार यज्ञ की अग्नि से उत्पन्न वायुमण्डल घर और समाज में फैले हुए विषैले कीटाणुओं को भस्म करके उड़ाकर ले जाती है।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. आजाद सिंह दूहन (पूर्व प्राचार्य नेहरू कॉलेज, झज्जर) ने कहा कि हमें अपने पूर्वजों के द्वारा दिखाये गए मार्ग पर चलना चाहिए और हमें अपने बच्चों को नैतिक, धार्मिक शिक्षा व सुसंस्कारों से ओतप्रोत करना चाहिए ताकि आज का बालक कल का युवा होकर सामाजिक बुराइयां दूर करने व राष्ट्र के उत्थान में अपना सहयोग कर सके।

इस अवसर पर कार्यक्रम अध्यक्ष पं० रमेशचन्द्र कौशिक ने कहा कि बेटियां परिवार की आन-बान-शान होती हैं। इसलिए कन्या भ्रूणहत्या के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान में सभी का सहयोग बहुत जरूरी है। पं० जयभगवान आर्य, प्रदीप शास्त्री, लाला प्रकाशवीर, जयप्रकाश राठी प्रधान आर्यसमाज झज्जर, विवेक गोयल, मा० द्वारिकादास रिटायर्ड प्राध्यापक, रमेश सैनी आदि ने अपने संबोधन में कहा कि समाज में पाखण्ड व अनेक सामाजिक बुराइयां व्याप्त हैं उन्हें दूर करने के लिए आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार करना नितान्त आवश्यक है। सभी ने सामाजिक बुराइयां दूर करने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर बालक-बालिकाओं को सम्मानित किया। मा० संदीप सैनी, कृष्ण ब्रह्मचारी, सूर्य प्रकाश, पनसिंह, नन्दराम, मुकेश आदि उपस्थित थे।

योगिराज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

आर्यसमाज मॉडल कालोनी, यमुनानगर में केन्द्रीय आर्य सभा यमुनानगर के तत्त्वावधान में योगिराज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव, 6 सितम्बर, 2015, दिन रविवार को बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस शुभ अवसर पर आर्यजगत् के युवा विद्वान् डॉ. आचार्य नरेन्द्र अग्निहोत्री (आचार्य गुरुकुल शादीपुर यमुनानगर), पं० धर्मेन्द्र शास्त्री यमुनानगर, डॉ. कमला वर्मा (पूर्व स्वास्थ्य मंत्री, हरयाणा सरकार) व प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री धर्मसिंह जी (गागलहेड़ी, उत्तर-प्रदेश) अपने भजन मण्डली के साथ, श्रीकृष्ण जी के जीवन चरित्र के ऊपर सभी विद्वानों ने प्रकाश डाले जिसमें आचार्य अग्निहोत्री जी ने गोसेवा एवं गो-संवर्धन के ऊपर विशेष बल दिया। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि गौ की सेवा इस समय बहुत जरूरी है। कार्यक्रम के पश्चात् बहन राजबाला आर्या एवं श्रीमती सविता आर्या जी की तरफ से प्रात:राश एवं ऋषिलंगर का सुन्दर आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में जिला यमुनानगर के सभी आर्यसमाजों के सदस्यों ने भाग लिया जिसमें वैदिक साधन आश्रम (गुरुकुल) के बच्चों का विशेष योगदान रहा। अन्त में आर्यसमाज के मंत्री डॉ. गेन्दाराम आर्य जी ने आये हुए सभी लोगों का धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ।

—डॉ. गेन्दाराम आर्य, मंत्री आर्यसमाज मॉडल कालोनी, यमुनानगर

मृतक श्राद्ध विषयक भ्रान्तियां.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

श्राद्ध करना चाहिये जैसे कि जीवित माता-पिता, दादी दादा व परदादी व परदादा को दिन में दो बार भोजन कराया जाता है। हर दृष्टि से मृतक श्राद्ध करना, तर्क, युक्ति व वेदादि शास्त्र विरुद्ध है। आर्य समाज के विद्वानों ने इस विषय का पर्याप्त साहित्य सृजित किया है। इनमें से एक ग्रन्थ 'श्राद्ध निर्णय' वेदों के शीर्ष विद्वान पं. शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ जी का रचा हुआ है। उसमें श्राद्ध के सभी पहलुओं पर विस्तार से विचार कर निर्णय किया गया है कि मृतकों का श्राद्ध अन्धविश्वास के अलावा कुछ नहीं है। यह भी बता दें कि हमारे यह पण्डित जी व हम भी पहले पौराणिक परिवारों के रहे हैं जहां मृतक श्राद्ध होता था और हमारे सम्बन्धी जो अज्ञान में फंसे हुए हैं, वह अब भी मृतक श्राद्ध करते हैं। अभी तक सनातनी कहे जाने वाले हमारे बन्धुओं ने कोई ऐसा प्रमाण व युक्ति नहीं दी है जिससे श्राद्ध को युक्ति व तर्क से सिद्ध किया जा सके। अतः बुद्धि से विचार कर हमें केवल अपने जीवित माता-पिता व परिवार के सभी वृद्ध जनों जिन्हें हमारा भोजन, वस्त्र, ओषधि वा चिकित्सा आदि के रूप में किसी भी प्रकार से सेवा की आवश्यकता है, हमें कर्तव्य पूर्वक प्रतिदिन प्रातः व सायं उनकी यथोचित सेवा करनी चाहिये। अपनों की तो सेवा सभी को करनी है, इसके साथ हि सभी ज्ञानी व वृद्ध लोगों का भी सेवा सत्कार यथा सामर्थ्य सभी को करना चाहिये। यही मनुष्य धर्म व वैदिक धर्म है। यदि हम बुद्धिपूर्वक कार्य करेंगे और अन्धविश्वासों का त्याग करेंगे तो हम वैदिक काल के अपने स्वर्णिम वैभव को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। हम भविष्य में पराधीनता व निजी व अपनी जाति व समाज के लोगों के अपमान से बच सकते हैं जैसा कि मध्यकाल, मुस्लिम व ब्रिटिश शासन आदि में हमारे पूवजों को झेलना पड़ा है। यदि ऐसा नहीं करेंगे और बीती बातों से सबक व शिक्षा नहीं लेंगे तो उन घटनाओं की पुनरावृत्ति हो सकती है। ठोकर लगने पर जो न सम्भले उसका जो हश्र होता है, वही हश्र हमारा पुनः हो सकता है।

एक अन्य दृष्टि से भी श्राद्ध पर विचार करते हैं। हम इस समय 63 वर्ष के हैं। जब 63 वर्ष पूर्व जन्म लेकर पूर्व जन्म की मृत्यु के बाद हम इस जीवन में आये तो सम्भव है कि हमारा 30 से 35 वर्ष का कोई पुत्र रहा होगा जो अब लगभग 93 वर्ष का होगा। उसका पुत्र भी लगभग 63 का और उस 63 वर्षीय का पुत्र लगभग 33 वर्ष का हो सकता है। इस प्रकार से पूर्व जन्म के हमारे पोते और पड़पोतों का जीवित होना सम्भव है। हमें अपने विगत 63 वर्षों के जीवन में इन सभी वंशजों से कभी श्राद्ध नाम का भोजन मिला हो, ऐसा अनुभव नहीं हुआ और न हि उससे होने वाली तृप्ति अनुभव हुई। संसार में सम्प्रति 7 अरब लोग हैं, शायद इसका एक भी गवाह नहीं मिलेगा जो दावा करे कि कभी उसके पूर्व जन्म के वशंजों के श्राद्ध से उसकी क्षुधा व अन्य कोई समस्या हल हुई हो। अतः यह मृतक श्राद्ध अन्धविश्वास ही सिद्ध होता है। महाभारत कालीन व पूर्व के साहित्य मुख्यतः वेद आदि में मृतक श्राद्ध आदि का कहीं कोई वर्णन नहीं है। अतः मृतक श्राद्ध असिद्ध है और अन्धविश्वास से अधिक कुछ नहीं है। यह भी कहना है कि हमारे कुछ ग्रन्थों में मध्यकाल में कुछ स्वार्थी लोगों ने प्रक्षेप कर दिये थे। यदि कहीं कोई उल्लेख मृतक श्राद्ध के पक्ष में है तो उस पर युक्ति पूर्वक विचार होना चाहिये। हर विद्वान, पुस्तक व ग्रन्थ लेखक को अपनी मान्यता के सम्बन्ध में तर्क व प्रमाण देने चाहिये। यदि कोरा प्रवचन हो तो उसे बुद्धि, युक्ति व तर्क हीन होने पर स्वीकार नहीं करना चाहिये। हम आशा करते हैं कि पाठक हमारे विचारों से सहमत होंगे। हम निवेदन करते हैं कि महर्षि दयानन्द, ईश्वर व आप्त विद्वानों व ऋषि-मुनियों द्वारा प्रदत्त वैदिक साहित्य को पढ़कर अपने जीवित पितरों का श्रद्धापूर्वक सेवा सत्कार नित्यप्रति कर उनकी आत्माओं को सन्तुष्ट व प्रसन्न करें और ऐसा करके लौकिक और पारलौकिक उन्नति करें, यही वेद, शास्त्र और ऋषि दयानन्द सम्मत है।

196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें। **—सभामन्त्री**

पितृयज्ञ और पितर की परिभाषा

❑ उम्मेदसिंह विशारद, वैदिक प्रचारक, देहरादून

वर्तमान पाश्चात्य सभ्यता एवं अति आधुनिक भौतिक करण के इस युग में सम्पूर्ण मानव समाज के परिवारों के उपेक्षित व्यवहार के कारण 90 प्रतिशत वृद्ध अत्यन्त दु:खी हैं और अनुमानित 40 प्रतिशत संन्यासी एवं वानप्रस्थियों को मृत्यु की अन्तिम गति की चिन्ता बनी रहती है और 50 प्रतिशत उपदेशकों को-अर्थाभाव एवं परिवार व समाज की अनदेखी के कारण जीवन का अन्तिम सोपान कैसे गुजरे की चिन्ता बनी रहती है। इन समस्याओं के समाधान के लिए हमें आगे आना ही होगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपनी दूरदर्शिता के कारण इस ज्वलन्त समस्या को समझते थे, तभी तो उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के पंचमहायज्ञ विषय में सर्वाधिक पांच पृष्ठ पितृयज्ञ और पितर की परिभाषा में लिखे हैं, जिसका सारांश सुधी पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है—

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ (य.अ. 19, मं. 39)

पितृयज्ञ जिसके दो भेद हैं—एक तर्पण दूसरा श्राद्ध उनमें से जिस कर्म को करके विद्वान् रूप देवर्षि और पितरों को सुखयुक्त करते हैं सो तर्पण कहलाता है तथा जो उन लोगों की श्रद्धापूर्वक सेवा करना है, उसी को श्राद्ध जानना चाहिए। यह तर्पण आदि कर्म विद्यमान आदि जीते हुए जो प्रत्यक्ष हैं, उन्हीं में घटता है, मरे हुओं में नहीं। क्योंकि मृतकों का प्रत्यक्ष होना असम्भव है। इसलिए उनकी सेवा नहीं हो सकती तथा जो उनके लिए पदार्थ दिया चाहे वह भी उनको नहीं मिल सकता। इससे केवल विद्यमानों के ही श्रद्धा पूर्वक सेवा करने का नाम 'तर्पण' और 'श्राद्ध' वेदों में कहा है। क्योंकि सेवा करने योग्य और सेवा करने वाले इन दोनों के प्रत्यक्ष होने से यह सब काम हो सकता है, दूसरे प्रकार से नहीं। तो तर्पण आदि कर्म से सत्कार करने योग्य देव, ऋषि और पितर हैं।

(पुनन्तु) हे जातवेद परमेश्वर! आप सब प्रकार से मुझे पवित्र कीजिए और आपके उपासक आपकी आज्ञा पालते हैं अथवा जो कि विद्वान् पुरुष कहलाते हैं, वे मुझको विद्यादान से पवित्र करें और आपके दिये विशेष ज्ञान व आपके विषय के ध्यान से हमारी बुद्धियां पवित्र हों तथा (पुनन्तु विश्वा भूतानि) सब संसारी जीव आपकी कृपा से पवित्र होकर आनन्द में रहें।

(द्वयं वा०) दो लक्षणों के पाये जाने मनुष्यों की दो संख्या होती है अर्थात् एक देव और दूसरी मनुष्य। उनमें भेद होने के सत्य और झूठ दो कारण हैं। (सत्यमेव) जो कोई सत्य भाषण, सत्य स्वीकार और सत्यकर्म करते हैं, वे देव तथा जो झूठ बोलते हैं, झूठ कर्म करते हैं, वे मनुष्य हैं। इसलिए झूठ को छोड़कर सत्य को प्राप्त होना सबको उचित है। इस कारण से बुद्धिमान लोग निरन्तर सत्य ही कहें, मानें और करें। क्योंकि सत्य आचरण करने वाले देव हैं, वे तो कीर्तिमानों में भी कीर्तिमान होके सदा आनन्द में रहते हैं, परन्तु उनसे विपरीत चलने वाले मनुष्य दु:ख को प्राप्त होकर सब दिन पीड़ित रहते हैं। इससे सत्यधारी विद्वान् ही देव कहलाते हैं।

(ऊर्जवह०) पिता व स्वामी अपने पुत्र, पौत्र, स्त्री और नौकरों को इस प्रकार आज्ञा देवे कि (तर्पयतमे०) जो हमारे मान्य पिता, पितामहादि, माता, मातामहादि और आचार्य तथा इनसे भिन्न भी विद्वान् लोग जो अवस्था या ज्ञान से बड़े और मान्य करने योग्य है, तुम लोग उनकी (उर्ज०) उत्तम जल (अमृत) रोग नामक करने वाले उत्तम अन्न, सभी प्रकार के उत्तम फलों के रस आदि पदार्थों से नित्य सेवा किया करो, कि जिससे वे प्रसन्न होकर तुम लोगों को सदा विद्या देते रहें, क्योंकि ऐसा करने से तुम लोग भी सदा प्रसन्न रहोगे और ऐसा विनय सदा रखो कि हे पूर्वोक्त पितर लोगो! आप हमारे अमृत रूप पदार्थों के भोगों से तृप्त होइए और हम लोग जो-जो पदार्थ आप लोगों की इच्छा के अनुकूल निवेदन कर सकें उन-उन की आज्ञा किया कीजिए। हम लोग मन, वचन और कर्म से आपके सुख करने में स्थित हैं। आप किसी प्रकार का दु:ख न पाइये। क्योंकि जैसे आप लोगों ने बाल्यावस्था और ब्रह्मचर्याश्रम में हम लोगों को सुख दिया है-वैसे ही हमको भी आप लोगों का प्रत्युपकार करना चाहिए कि जिससे हम लोगों को कृतघ्नता दोष प्राप्त न हो।

(आयुन्त न:) पितृ शब्द से सबके रक्षक श्रेष्ठ स्वभाव वाले ज्ञानियों का ग्रहण होता है। क्योंकि जैसी रक्षा मनुष्यों की सुशिक्षा और विद्या से ही हो सकती है वैसी किसी दूसरे प्रकार से नहीं। इसलिए जो विद्वान् लोग मनुष्यों को ज्ञानचक्षु देकर उनके अविद्यारूपी अन्धकार के नाश करने वाले हैं, उनको पितर कहते हैं। उनके सत्कार के लिए मनुष्य मात्र को ईश्वर की आज्ञा है कि वे इन आते हुए पितर लोगों को देखकर अभ्युत्थान अर्थात् उठ के प्राप्ति पूर्वक कहें कि आइये-बैठिये, कुछ जलपान कीजिये और खाने-पीने की आज्ञा दीजिये। पश्चात् जो-जो बातें उपदेश करने योग्य हैं, सो-सो प्रीतिपूर्वक समझाइये कि जिससे हम लोग भी सत्य विद्यायुक्त होके सब मनुष्यों के पितर कहलावें।

विद्वानों के दो मार्ग होते हैं-एक देवयान दूसरा पितृयान अर्थात् जो विद्या मार्ग है, वह देवयान और जो कर्मोपासना मार्ग है, वह पितृयान कहलाता है। सब लोग दोनों प्रकार के पुरुषार्थ को सदा करते रहें। जो विद्वान् लोग कनिष्ट मध्यम और उत्तम चन्द्रमा के समान सब प्रजाओं को आनन्द कराने वाले प्राण विद्या-निधान शत्रु रहित अर्थात् सबके प्रिय पक्षपात छोड़कर सत्य मार्ग में चलने वाले तथा जो कि ऋतु अर्थात् ब्रह्म यथार्थ धर्म और सत्य विद्या के जानने वाले हैं, वे पितर लोग युद्धादि व्यवहारों में हमारे साथ होकर अथवा उनकी विद्या देकर हमारी रक्षा करें।

जो चौबीस वर्ष ब्रह्मचर्याश्रम से वेदादि विधाओं को पढ़कर सबके उपकारी और अमृतरूप ज्ञान के देने वाले होते हैं, जो अड़तालीस वर्ष पर्यन्त जितेन्द्रियता के साथ सम्पूर्ण विद्याओं को पढ़कर हस्त क्रियाओं से भी सब विद्या के दृष्टान्त साक्षात देखकर दिखलाते और जो सबके सुखी होने के लिए सदा प्रयत्न करते रहते हैं उनका मान भी सब लोगों को करना उचित है।

(पुनन्तु मा पिता महा:) जो पितर लोग शान्तात्मा और दयालु हैं वे मुझको विद्यादान से पवित्र करें। इसी प्रकार पितामह और प्रपितामह भी मुझको अपनी उत्तम विद्या पढ़ाकर पवित्र करें। इसलिए उनकी शिक्षा को सुनकर ब्रह्मचर्य धारण करने से सौ वर्ष पर्यन्त आनन्दयुक्त उमर होती रहे तथा जहां कहीं अमावस्या में पितृयज्ञ करना लिखा है वहां भी इसी अभिप्राय से है कि जो कदाचित् नित्य उनकी सेवा न कर सके तो महीने-महीने अर्थात् अमावस्या में मासेष्टि होती है, उन में उन लोगों को बुलाकर अवश्य सत्कार करें।

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

सम्बलपुर। गत 2 अगस्त 2015 को आर्यसमाज सम्बलपुर के विशाल सभागार में बहुत शांत वातावरण में लगभग 300 आर्यसमाजों के 400 से अधिक प्रतिनिधियों की उपस्थिति में सभा के प्रधान एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना के संचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में प्रतिनिधि सभा के चुनाव निर्वाचन अधिकारी श्री धनुर्धर महापात्र ने निर्विघ्न रूप से चुनाव सम्पन्न कराया। निर्वाचन सर्वसम्मति से इस प्रकार हुआ—

प्रधान-पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
मंत्री-श्री वीरेन्द्र कुमार जी पण्डा
कोषाध्यक्ष-श्री गोपालदास जी रावल

—आचार्य रणजीत विवित्सु, कार्यालयाध्यक्ष, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।